Chapter- 8

महान नरेंद्र

STUDY NOTES

MIND MAP

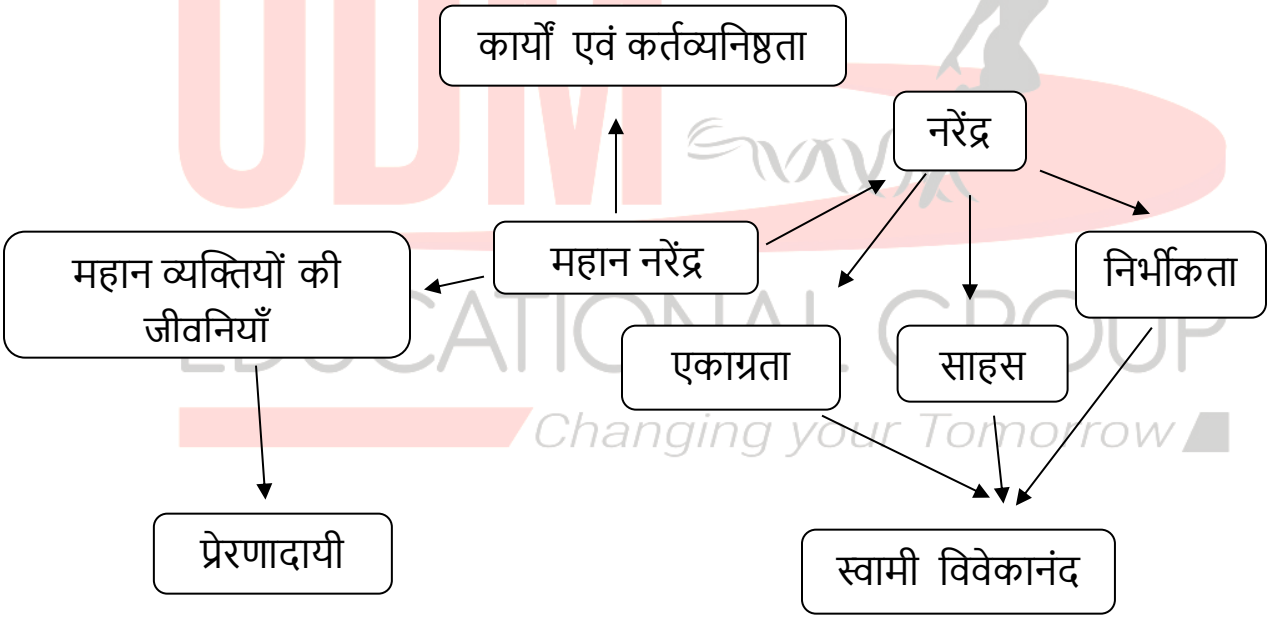

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow

पाठ प्रवेश –

कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता, आपने कार्यों एवं कर्तव्यनिष्ठता से महान बनता है। बचपन से साधारण बालकों के समान समाज- सुलभ हरकतें करने वाला 'नरेंद्र ' आगे चलकर अपनी निर्भीकता, साहस और एकाग्रता के बल पर स्वामी विवेकानंद कहलाया। महान व्यक्तियों की जीवनियाँ समाज के लिए प्रेरणादायी होती हैं।

सारांश

प्रस्तुत संकलन में स्वामी विवेकानंद का जन्म, उनका बचपन तथा उनके जीवन के अन्य पहलुओं का बहुत रोचक ढंग से वर्णन हुआ है। नरेंद्र पर उनकी माता भुवनेश्वरी देवी का गहरा प्रभाव पड़ा। वे धार्मिक व सुसंस्कृत प्रवृत्ति की महिला थीं। वे कथा–कहानियाँ सुनाकर नरेंद्र में उच्च संस्कारों का उपार्जन करती रहती। उनके पिता विश्वनाथ दत्त कोलकाता के उच्च न्यायालय में वकील थे। पिता से कुशाग्र बुद्धि और माँ से धार्मिक विचार उन्हें विरासत में मिले। वे साहसी व निर्भीक स्वभाव के थे। नरेंद्र प्रखर बुद्धि के थे। वे एक बार जो पाठ याद कर लेते थे उसे कभी भी नहीं भूलते थे। संगीत से उन्हें प्रेम था तथा कुश्ती, घुड़दौड़ तथा तैराकी में भी वे प्रवीण थे। नरेंद्र को पढ़ने का बहुत शौक था। जब वे मेरठ पुस्तकालय में थे तो पुस्तकालय से किताब लाकर एक ही दिन में वापस कर देते थे। उनके नियमित ऐसा करने से पुस्तकालय अधिकारी को शंका होने लगी। एक दिन अधिकारी ने उन्हें टोक दिया कि वह एक दिन में एक किताब कैसे पढ़ लेता है, इस पर नरेंद्र ने कहा कि किताब में से वह उससे कुछ भी पूछ सकते हैं। जब अधिकारी ने सवाल पूछे तो नरेंद्र ने सबके उत्तर बता दिए और इसके लिए उन्होंने अभ्यास तथा एकाग्रता को महत्त्व दिया। यही नन्हा बालक नरेंद्र आगे चलकर स्वामी विवेकानंद के नाम से विख्यात हुआ।